B.A. (Part - III)

The Indian Money MARKET!

जिस बाजार में मुद्रा अल्पकालिन लेन-देन का कार्य होता हैं उसे मुद्रा-बाजार (Money market) तथा जहाँ दीर्घकालीन लेनदेन का कार्य होता उसे पुँजी-बाजार कहते हैं।

मुद्रा-बाजार को कई प्रकार से प्रभावित परिभाषित किया गया हैं। इनमें निम्नांकित परिभाषाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:- Federal Reserve Bank के अनुसार, "मुद्रा-बाजार ऐसी मौद्रिक परिसम्पत्तियों के लेन देन के लिए सक्रिय बाजार हैं जिन्हें वित्तिय संस्थाएँ, सामान्य व्यवसाय के अन्तर्गत अपनी-अपनी आर्थिक स्थिति को यथोष्ठ, तरल बनाये रखने के लिए रखती हैं।"

इसी प्रकार रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के अनुसार, "मुद्रा-बाजार अल्पकालिन मौद्रिक परिसम्पत्तियों के क्रय-विक्रय का केन्द्र हैं। यह उधार लेनेवालों की अल्पकालीन ऋण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करता तथा ऋणदाताओं को तरलता प्रदान करता हैं।"

डॉ सेन के अनुसार, "मुद्रा-बाजार वह व्यवस्था हैं जिसमें, व्यावसायिक विनिमय बिलों, अल्पकालिन सरकारी प्रतिभूतियों ... प्रतिभूतियों आदि के आधार

पर अल्पकालीन ऋण के लेन-देन का कार्य होता है।"

Main Features of the Indian Money Market:

भारतीय मुद्रा-बाजार विकसित देशों के मुद्रा-बाजारों से पूर्णतया भिन्न है। इसकी निम्नांकित प्रधान विशेषताएँ हैं :—

1. सर्वप्रथम तो भारतीय मुद्रा-बाजार की प्रमुख विशेषता इसकी द्विभाजिता है, यानि इसे स्पष्ट रूप से निम्नांकित दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) आधुनिक अथवा संगठित मुद्रा बाजार एवं

(ख) देशी अथवा पूर्ण रूप से असंगठित मुद्रा-बाजार।

2. आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में यहाँ स्वदेशी बैंकर तथा महाजनों की ही प्रधानता है जिन पर रिजर्व बैंक का अभी तक कोई प्रभावपूर्ण नियंत्रण नहीं हो पाया है।

3. मौसमी प्रकृति :→ देश के प्रमुख व्यवसाय कृषि की प्रकृति मौसमी होने के कारण भारतीय मुद्रा बाजार में भी मौसमी परिवर्तन होते रहता है।

4. सरकारी एवं अर्द्ध-सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय :→ भारतीय मुद्रा-बाजार की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें

5 बट्टा - गृहों का अभाव →

भारतवर्ष मे व्यापारिक बिलों के अभाव के कारण यहाँ के मुद्रा-बाजार मे लंदन मुद्रा - बाजार की तरह के बट्टा - गृहों का पूर्ण रूप से अभाव पाया जाता है।

6 ऋण की सुविधा : →

भारतीय मुद्रा - बाजार की एक महत्वपूर्ण विशेषता अंतर - बैंक मुद्रा - बाजार है अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर मुद्रा - बाजार मे कार्यरत सदस्य एक दूसरे से ऋण प्राप्त कर सकते है।

7 आधुनिक बैंकों जिनमे : →

मुख्यत: बड़े - बड़े संपुल पूँजी वाले बैंक तथा अर्द्ध - सरकारी विशिष्ट वित्तीय संस्थाएँ आती है। उद्योगों को प्रमुखतया दीर्घकालीन ऋण की सुविधाएँ देते है

क्रमश: